कृषि विज्ञान केन्द्र, कुरारा, हमीरपुर
प्रसार निदेशालय
बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा

डा0 एस.पी.एस. सोमवंशी, वैज्ञानिक–पशु विज्ञान

चुने भैंस की नस्ल अपने क्षेत्र के अनुसार

भारत एक जैव विविधता वाला देश है। भारत की लगभग 60 प्रतिशत आबादी कृषि पर आश्रित है या फिर इससे जुडी हुई है कृषि के अदंर पशुधन का अपना एक विशेष स्थान है। विश्व में गाय व भैंस दूध के सबसे बड़े स्त्रोत हैं। जिसमे गाय सबसे बड़ा तथा भैंस दूसरा बड़ा स्त्रोत है, जबकि भारत में भैंस सबसे बड़ा स्त्रोत है। भारत में लगभग प्रतिवर्ष 980 लाख टन दूध उत्पादन होता है जिसका 54 % हिस्सा भैंसों से आता है। भारत में भैंसों की संख्या 434 लाख से बढकर 970 लाख 1951-2003 तक हो गयी है। भैंसों के पालन का प्रमाण भारत में हड़प्पा व मोहनजोदडो की खुदाई के दोरान से मिलता हैं। इससे यह अंदाजा लगाया जा सकता है की भैंसों को पालना 200 बी. सी. -1600 बी. सी. के समय आस पास हुआ होगा, भारत में भैंस का पालन दूध के अलावा खेती व मांस उत्पादन के लिए भी किया जाता है।

पोषण और जीवन चक्र - साधारणतः एक भैंस की उम्र लगभग 18-20 वर्ष की होती है व अपने सम्पूर्ण जीवन में 9-10 बार ब्याती है भैंस एक रोमंथी पशु है। तथा प्राकृतिक रूप से चरने वाले होते हैं। ये कम गुणवत्ता वाले राशन को भी अच्छी तरह से पचा लेते हैं, क्योंकि भैंस के रुमेन द्रव्य में अधिक संख्या में जीवाणु होते हैं, जो नॉन- नाइट्रोजिनस पदार्थ को भी उच्च प्रोटीन में बदल देते हैं। भैंस के रुमेन में गाय के रुमेन की अपेक्षा अधिक वाष्पशील फैटी एसिड का उत्पादन होता है, यही कारण है, की भैंस के दूध में गाय के दूध की अपेक्षा अधिक वसा होती है।

भैंसों की उपयोगिता- एशियाई देशों मे भैंस खेती मे बोझा ढोने का एक महत्वपूर्ण साधन है। यह कृषि के काम मे आने वाले संयंत्र, छोटे स्त्रोतों द्वारा सिंचाई, फसलों को ढोना, खासकर गन्ने की फसल व अनाज तोड़ने मे अधिक प्रयोग होता है, क्योंकि दक्षिण एशियाई देशों मे ज्यादातर किसान सीमांत है, या छोटी जोत वाले हैं। इस लिए वे बड़ी मशीनरी का प्रयोग करने मे असमर्थ होते है। एक तरह से ये उनके जीवन-यापन का सहारा होते हैं। भैंश वंशीय पशु को कम देखभाल की जरूरत पड़ती है।

इनके खुर बड़े होने की वजह से ये आसानी से और अधिक समय तक गीलापन सहन कर सकते हैं। भैंस एक भारी शरीर वाला पशु है। इसका प्रयोग खासकर एशियाई देशो मे मांस उत्पादन के लिए किया जाता है। भारत मे यह मांस उत्पादन व निर्यात के लिए एक महत्वपूर्ण पशु है। संयुक्त राष्ट्र की एक संस्था "खाद्य और कृषि संगठन" (FAO) के अनुसार वर्ष 2004 मे भैंसों से दूध उत्पादन 75.8 करोड़ टन था। भैंस के दूध मे कुल ठोस वसा व प्रोटीन अधिक और विटामिन गाय के दूध मे अधिक होते हैं। भैंस के दूध मे कैरोटीन का आभाव होता है, यही कारण है, की भैंस का दूध गाय दूध की अपेक्षा अधिक सफेद होता है।

डेयरी उद्योग के लिए अच्छे दुधारू गुण वाले पशुओ का होना आवश्यक होता है। तभी यह उद्योग लाभदायक होगा। इसके लिए सर्वप्रथम अच्छी भैंसों का चुनाव करना जरुरी होना चाहिए। कई बार हम बाहरी देह देख कर खरीद लाते है, पर वे अधिक दुग्ध उत्पादन में खरे नही उतर पाते है। कभी कभी दखेने को मिला है, की कमजोर पशु भी अच्छे संतुलित पोषक युक्त आहार व सही प्रबंधन से अच्छे दुग्ध उत्पादन पर खरे उतरते है। अत: पशु खरीदते समय कुछ बातो का ध्यान रखना चाहये, तो अच्छे पशु का चुनाव कर सकते है।

भैंसों की नस्लें

मुर्राह

मुर्राह भैंस की नस्ल दूध उत्पादन के लिए विश्व में सबसे अच्छी है। यह नस्ल मुख्यतय: दूध व मांस के लिए पाली जाती है, ये तटीय व कम तापमान वाले क्षेत्रों में भी आसानी से रह लेती है। मुर्रा हरियाणा, दिल्ली व पंजाब में मुख्यतः पाई जाती है। इसका मिलने का मुख्य स्थल हरियाणा के मुख्यतः रोहतक, भिवानी, झज्जर, हिसार एवं जींद जिलों में पायी जाती है पशु काले, बड़े डील-डोल शरीर वाले होते है, मादा का सिर छोटा, अच्छे नयन नक्स लिए होती है, सांड चौडे व बड़े वजनी होते है, बाल घने व छोटे होते है, सींग छोटे कसे हुए मुड़े छल्ले के समान होते है, मादा की आंखे चमकीली सतर्क होती है, मादा की गर्दन लम्बी, पतली होती है व नर में मजबूत तथा मांसल होती है, कमर चौडी होती है, पुँछ लम्बी व निचले सिरे पर सफ़ेद काले बालों का गुच्छा होता है, अयन का जुडाव मजबूत, नसे उभरी हुयी होती है, थन आपस में समान दूरी पर जुड़े होते है, पिछला अयन प्रदेश अधिक बड़ा होता है, नर का वजन लगभग 450-800 किग्रा, मादा का लगभग 350-700 किग्रा, होता है, प्रथम गर्भधारण की उम्र 920-1,355 दिन, प्रथम ब्यांत उम्र 1,214-1647 दिन, दुग्ध उत्पादन 904-2041किग्रा, दुग्ध स्रवण काल 254-373 दिन, शुष्क काल 145-274 दिन, वसा 7.3 प्रतिशत होता है, इसका दुग्ध उत्पादन 8 से 10 लीटर प्रतिदिन होता है, जबकि संकर मुर्रा एक दिन में 6 से 8 लीटर दूध देती है। भैंसें जिनकी नस्ल के गुण अभी निर्धारण नहीं हुए है, उनका सुधार भी मुर्राह नस्ल से ही किया जा रहा है। हमारे देश में सभी जगह मुर्राह ग्रेडेड भैंसे हैं, जो की वहां के वातावरण में आसानी से रहकर दूध उत्पादित कर रही हैं।

नीली-रावी

यह नस्ल मुर्राह के सामान ही होती है, मगर इसके पैरों व माथे पर सफ़ेद धब्बे होते है, इसको पंच कल्याणी भी कहते है। यह नस्ल फिरोजपुर, पटियाला व अमृतसर जिलों (पंजाब) में पायी जाती है यह नस्ल सतलुज व रावी नदी के दोआब क्षेत्र भारत पाकिस्तान सरहद तक फैली हुयी है। इसका नाम सतलुज नदी के नीले रंग के पानी की वजह से नीली पड़ा तथा रावी नदी के आसपास के वजह से रावी नाम पड़ा यह मिश्रित नस्ल है। इसकी त्वचा तथा बालों का रंग काले से भूरेपन लिए होता है, कभी-कभी सलेटी रंग में भी पायी जाती है, इसके माथे, मुख,थूथन,पैरों पर सफ़ेद धब्बे पाए जाते है, यह मध्यम आकार व गहरे शरीर वाली होती है। सींग छोटे, मुडे हुए एक दुसरे को काटते हुए होते है, गर्दन लम्बी, पतली और साफ़ बनावट की होती है, पूंछ कड़ी सिरों पर बालों का सफ़ेद गुछा होता है, इनके नर का वजन लगभग 567 किग्रा, व मादा का 454 किग्रा, होता है, प्रथम ब्यांत उम्र 1,216-1,617 दिन, दुग्ध उत्पादन 780-1,520 किग्रा, दुग्ध स्रवण काल 263-316 दिन, शुष्क काल 115-202 दिन, वसा 5.1-8.0 प्रतिशत होता है।

भदावरी

भदावरी भैंस अपने दूध में अधिक वसा प्रतिशत के लिए जानी जाती है। यह प्रजाति यमुना तथा चम्बल के दोआब में पायी जाती है, मुख्यतया उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश में पाई जाती है। यह आगरा के बाह, चकरनगर, और बारह्पुरा व इटावा ब्लाक में पायी जाती है, इसका नाम आजादी से पहले भदावर रियासत के नाम पर पड़ा, यह प्रजाति मध्यम आकार व तिकोना शरीर लिए होती है, यह आगे से पतली व पीछे से चौडी होती है, रंग काला- तांबाई होता है, पैरों का रंग थोड़ा गेहुआ होता है, शरीर पर बाल कम होते है, बछ्द्दे बडों से हलके रंग के होते है, प्राय: रंग सलेटी एवं हल्का सलेटी होता है, दो सफ़ेद धरिया जिसको ग्रामीण कंठी के नाम से पुकारते है, निचले गर्दन पर होती है, सिर छोटा होता है, सींग काले व मुडी हुयी हलके से बहार की और निकले हुए होते है, आँखों की ऊपर बालों का रंग तांबाई रंग लिए होती है व काले पाया जाता है, खुर काले होते है, पूंछ लम्बी घनी होती है, कभी- कभी भूरी व सफ़ेद सिरे पर गुच्छे होते है अयन कूप छोटा तथा अल्प विकसित होता है थन नुकीले होते है, नर का लगभग वजन 800-1000 किग्रा व मादा का 450-700 किग्रा होता है, प्रथम गर्भधारण की उम्र 920-1355 दिन, प्रथम ब्यांत उम्र 1335-1550 दिन, दुग्ध उत्पादन 699-1165 किग्रा, दुग्ध स्रवण काल 234-300 दिन, शुष्क काल 145-260 दिन, वसा 6.0-12.5 प्रतिशत होता है, खनिज मात्रा 17 प्रतिशत।

मेहसाना

यह एक मुख्य: दुधारू नस्ल है, गुजरात के मेहसाना नगर के समीप बहुतयात में पाई जाती है। यह बानसकांता गांधीनगर और अहमदनगर जिलों में पाई जाती है, यह मुर्राह व सुरती की संकरण नस्ल है, मादा सीधी स्वभाव की होती है, व नर आसानी से संभाले जा सकते है यह पशु काले भूरे व भूरे रंग के होते है, थूथन व सींग काले होते है, अग्र सिर (माथा) फैलाव लिए हुए सीधा व झुकाव लिए सींग तक होता है, मुख लंबा व सीधा आंखे चमकीली काली होती है, कान मध्यम तथा किनारे पर नुकीले होते है, व अन्दर की बाल पाए जाते है, सींग हंसिये के आकार के होते है, मुख्यता नीचे की और झुके होते है, गर्दन लम्बी ,कंधो से सही से जुड़ी होती है, नर की गर्दन मांसल तथा कूबड़ लगभग नही होता है, छाती गहरी व चौडी होती है, पैर मध्यम से छोटे लम्बाई में व साफ़-सुधरी जुडाव लिए होते है, खुर काले होते है, अयन का जुडाव मजबूत, नसे उभरी हुयी होती है, थन आपस में समान दूरी पर जुड़े होते है, पिछला अयन प्रदेश अधिक बड़ा होता है, नर का वजन लगभग 400-602 किग्रा, मादा का लगभग 315-580किग्रा, होता है, प्रथम गर्भधारण की उम्र 830 दिन, प्रथम ब्यांत उम्र 1266 दिन, दुग्ध उत्पादन 598-3220 किग्रा, दुग्ध स्रवण काल 308दिन, शुष्क काल 99-580दिन, वसा 7 प्रतिशत है।

सुरती

यह नस्ल का मुख्य: दक्षिण पश्चिम गुजरात प्रान्त में पायी जाती है, ये खेडा, वडोदरा, भरूच तथा सुरत जिलों में पायी जाती है, यह नस्ल हलके शरीर व कम वजन वाली होती है, यह अल्प चारा व कम संसाधन, विपरीत परस्थिति में भी रहने के अनुकूल नस्ल है, यह गरीब,लघु, तथा छोटे किसानों की लोकप्रिय नस्ल है, यह धूसर भूरे से हलके सलेटी रंग में मिलती है, त्वचा का रंग काला व भूरा होता है, पशु मध्यम आकर, व सीधे पीछे तक होते है, सिर साफ़ बड़ा तथा सींगों के बीच में गोल होता है, सींग चपटे व मध्यम आकर के हंसये के रूप लिए होते है, थोड़ा नीचे व पीछे की और झुके होते है, सिरे पर हुक के सामान होते है, मुख व थूथन बड़े व साफ़ होते है, आंखे लाल रंग गोल मध्यम तथा चमकीली होती है, मादा की गर्दन लम्बी तथा नर की मजबूत और भारी सफ़ेद रंग का कालर होता है, और गर्दन के नीचे सफ़ेद धारियां पायी जाती है, अयन सुविकसित, पूर्ण आकर लिए पिछले टखनों के मध्य सुविस्थित होते है, थन मध्यम आकार के होते है, पूँछ लम्बी पतली, तथा लचकदार होती है, नर का वजन लगभग 500 किग्रा, व मादा का 383 किग्रा, होता है, प्रथम गर्भधारण की उम्र 485-970 दिन, प्रथम ब्यांत उम्र 1,050-1770 दिन, दुग्ध उत्पादन 1,208-2,203 किग्रा, दुग्ध स्रवण काल 280-373 दिन, शुष्क काल 212-289 दिन, वसा 7.3-8.3 प्रतिशत, होता है।

बननी भैंस-

बननी भैंस का यह नस्ल गुजरात के कच्छ क्षेत्र में पाई जाती है। इस नस्ल को मुख्य रूप से मालधारी लोग पलते हैं। ये लोग अनपढ़ होते हैं ये भूमिहीन तथा बेरोजगार होते हैं। इनका पूरा पशुधन जीरो लागत पर चलता है। यह भैंस दिन भर चरने के बाद अपने डेरे पर लोट आती है, तथा जीरो लागत पर ही अच्छा दूध उत्पादन देती है। इन भैसों से जो दूध उत्पादन मिलता है, उसी दूध को बेचकर ये लोग अपना जीवन निर्वाह करते है। गुजरात के कुछ पिछडे इलाके जहाँ पर यातायात के साधनों का अभाव है, वहां पर ये लोग भैंस से 24 घंटे में एक बार ही दूध निकलते हैं। भैंसों में ये लोग प्राकृतिक प्रजनन अपनाते हैं, जिसके लिए ये 20-25 भैंसों के झुंड में एक सांड रखते हैं। इस नस्ल का औसत दुग्ध उतपादन 8-10 किलोग्राम प्रति दिन का होता है, जबकि इसकी रेंज 5-24 किलोग्राम तक है। इसकी औसत पीक उत्पादन 15 किलोग्राम है। इसका चेहरा चोडा तथा चपटा होता है, तथा आकार में छोटा होता है। इसके सींग छोटे तथा घुमावदार होते हैं। इसके शारीर का रंग काला होता है। इसका शारीरिक औसत भार 400-500 किलोग्राम तक होता है।

ज़फराबादी:

यह भैंस प्रजाति की सबसे बड़ी व वजनी नस्ल है, यह गुजरात प्रान्त के जूनागढ़, भावनगर, तथा अमरेली जिलों में मिलती है, इसका नाम जाफराबाद नगर के आसपास पाए जाने से पड़ा यह नस्ल गिर के जंगलों में भी पाई जाती है, यह नस्ल काले व बड़े शरीर वाले होते है, कभी- कभी सलेटी रंग में भी मिलते है, बाल मध्यम लम्बाई सीधे होते है, त्वचा का रंग काला, सींग, थूथन, खुर तथा पुँछ गुछ काले होते है, माथा चौडा बड़ा तथा तिकोना होता है, सींग 50 सेमी. तक लम्बे, बीच से ऊपर की मुड़े हुए होते है कान लंबे होते है, अयन सुविकसित, पेंडूलस, गोल व समान होते है, थन नुकीले होते है, दुग्ध शिराएँ मध्यम आकर की होती है, यह भैंस थोड़ी गुस्सेल स्वभाव की होती है, नर का वजन 800-1000 किग्रा, व मादा का 450-700 किग्रा, होता है, प्रथम गर्भधारण की उम्र 920-1,355 दिन, प्रथम ब्यांत उम्र 1,146 -1360 दिन, दुग्ध उत्पादन 895-2151 किग्रा, दुग्ध स्रवण काल 254-319 दिन, शुष्क काल 145-260 दिन।

नागपुरी

यह एक दुकाजी नस्ल है, इसका उत्पत्ति स्थल महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र हैं यह मुख्यतः नागपुर तथा वर्धा जिलों में पायी जाती है, इसकी चार उप-प्रजाति क्रमश: पुर्नाथादी (अकोला), एल्लिचपुरी (अमरावती), गौलानी (वर्धा) तथा नागपुरी (नागपुर) जिलों में पायी जाती हैं, यह सभी उप प्रजातियाँ नागपुरी या बरारी भैंस नाम से जानी जाती हैं, यह भैंस भारी सूखे के प्रति सहनशील होती है, विदर्भ के किसानों में बहुत प्रसिद्ध है, क्योंकि यह कम लागत में अच्छा दूध उत्पादन तथा यहाँ के वातावरण के लिए अनुकूल नस्ल है इस नस्ल के पशु काले रंग के होते हैं इनके मुख, पैर व पूँछ पर सफ़ेद पैबंद होते है, पुरंथादी उप प्रजाति हल्का भूरा सा रंग लिए हुए माथे पर सफ़ेद पैबंद होता है सींग 50-65

सेमी. चपटे घुमाव लिए हुए पीछे की और गर्दन से कंधो तक होते है, सींग नरों में मादाओं से भारी होते है, मुख लंबे, पतले तथा शंकु आकार के होते है, कान मध्यम व सिरे पर नुकीले होते हैं, पूँछ छोटी व सिरे पर सफ़ेद बालों का गुछा होता है, इनके नर का वजन लगभग 520 किग्रा व मादा का 400 किग्रा. होता है, औसतन प्रथम ब्यांत उम्र 1,672 दिन, दुग्ध उत्पादन 780-1,520 किग्रा, दुग्ध स्रवण काल 286 दिन, शुष्क काल 129.1 दिन, वसा 7.0-8.5 प्रतिशत होता है।

पंधारपुरी भैंस-

यह एक मुख्य: दुधारू नस्ल है, यह नस्ल महाराष्ट्र के दक्षिण क्षेत्र मे पाई जाती है, जिसमे सूखे के प्रति अधिक सहनशील होती है। इसका रंग हल्का काला व सलेटी रंग लिए हुए होती है। इसका चेहरा संकरा लम्बा मुख तथा गर्दन चौड़ी व मोटी होती है, इसके सींग लम्बे व पीछे की तरफ कन्धों को छुते हुए होते है इसका शारीरिक आकार मध्यम होता है पुँछ छोटी व सिरे पर सफ़ेद गुछा होता है इस भैंस की प्रथम ब्यांत पर उम्र 42-44 महीने होती है, ब्यांत अन्तराल औसतन 465 दिन का होता है, इसका दूध उत्पादन 305 दिन का औसतन 1400 किलोग्राम होता है, व दुग्ध काल औसतन 350 दिनों का होता है।

मराठवाड़ा-

यह नस्ल महाराष्ट्र के मराठवाड़ा क्षेत्र में पाई जाती है। यह सूखे व् गर्मी के प्रति अधिक सहनशील होती है। यह कम गुणवत्ता वाले चारे को भी खाकर अधिक दूध देती है, इसकी प्रथम बंयात पर उम्र 52-54 महीने होती है। दूध का औसत उत्पादन 305 दिनों का 1000 किलोग्राम है। औसत दुग्ध काल 270 दिनों का है, तथा बंयात अन्तराल 430 दिनों का होता है। यह भैंस माध्यम आकार की होती है, तथा शरीर सुडोल होता है इनके शारीर का रंग ग्रेयिश ब्लैक से लेकर जेट ब्लैक तक होता है। इसके सींग माध्यम आकार के व् गर्दन के समांतर होते हुए कन्धों तक जाते हैं। इसका चेहरा पतला तथा लम्बा व् माथे पर एक सफ़ेद धब्बा होता है, जो प्रायः इस नस्ल की भैंसों में होता है। इस भैंस की पूँछ आकार में छोटी तथा पूँछ के अंत में एक सफ़ेद बालों का गूच्छा होता है।

टोडा-

यह नस्ल तमिल नाडू के पश्चिमी क्षेत्र मे पाई जाती है, जिसमे सूखे के प्रति अधिक सहनशील होती है। इस नस्ल के पशु किसान के घर जाकर ही दूध दे देते है, यह इनकी एक अलग ही विशेषता है। इसका रंग हल्का व गहरा ग्रे रंग लिए हुए होती है। इसका चेहरा चोड़ा व उभरा हुआ होता है। इसके सींग लम्बे व अर्धगोलाकार होते है। इसका शारीरिक आकार मध्यम होता है। पुँछ लम्बी व सिरे पर काला गुच्छा होता है। इस भैंस की प्रथम ब्यांत पर उम्र 45-47 महीने होती है, ब्यांत अन्तराल औसतन 480 दिन का होता है, इसका दूध उत्पादन 305 दिन का औसतन 700 किलोग्राम होता

है, व दुग्ध काल औसतन 250 दिनों का होता है।

स्वाम्प भैंस-

यह नस्ल ब्रह्मपुत्र नदी के दलदली क्षेत्रों मे पाई जाती है। यह कम दूध देने वाली नस्ल है, इस भैंस का रंग हल्का तथा गहरा काला होता है। शारीर का आकार छोटा व गठीला होता है। गर्दन हलकी व पतली होती है, सींग सीधे लम्बे व अंत में मुड़े हुए होते है इसका औसत दूध उत्पादन 305 दिनों का 500 किलोग्राम होता है। प्रथम बंयात की उम्र 54-55 महीने की होती है। औसतन दुग्ध काल 313 दिनों का होता है, तथा बंयात अन्तराल औसतन 511 दिनों का होता है।

इन नस्लों के आलावा हमारे देश में भैंस की कई जातियाँ हैं। जिनका गुण निर्धारण का कार्य चल रहा है, जैसे की बननी गुजरात से गोदावरी आंध्र प्रदेश से, आसामी व मणिपुरी पूर्वोत्तर राज्यों से कालाहांडी, चिल्का, परलखमुडी, कुजंग व संबलपुरी उड़ीसा से हैं। ये सभी महत्वपूरण नस्लें है जिनके विकास पर ध्यान देने की जरूरत है।

उपरोक्त सभी भैंसों में दूध उत्पादन की दृष्टि से मुर्रा नस्ल की भैंस सबसे ज्यादा अच्छी है। यह विश्व में सबसे अधिक दूध देती है। भारत में इस नस्ल को सबसे अधिक उत्तर भारत में पाला जाता है। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य नसले भी हैं जो सूखे इलाकों में पाई जाती हैं। जैसे टोडा, मराठ्वाडा आदि जीनका दूध उत्पादन तो कम होता है, लेकिन इनसे दूध उत्पादन जीरो लागत पर ही मिल जाता है, साथ में इनके अन्दर सूखे को भी सहन करने की जबर्जद्स्त क्षमता होती है। इन नस्लों को प्रजनन, उचित पोषण व अच्छे रख रखाव से सुधारा जा सकता है, व अच्छा उत्पादन भी लिया जा सकता है। भैंसों में प्रजनन की सबसे बड़ी समस्या है, क्योंकि भैंस एक मौसमी प्रजनक पशु है। इसके आलावा भैंस में प्रथम ब्यांत की उम्र भी अधिक होना एक कारण है। अतः अभी भैंसों में अभी दूध उत्पादन बदने के लिए काफी सारे प्रयासों की जरूरत है।